दिनांक :- 02-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A Part (I) प्रतिष्ठा इतिहास

मध्य पुरापाषाण काल और उसकी संस्कृतियाँ

(iii) मध्य पुरापाषाण काल :- इस काल की महत्वपूर्ण विशेषता थी प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल में परिवर्तन पुरापाषाण काल में क्वार्टजाइट प्रमुख कच्चा माल था जबकि मध्य पुरापाषाण काल में जैस्पर, चर्ट आदि प्रमुख कच्चा माल हो गया।

मध्य पुरापाषाण काल के स्थल प्रायः सम्पूर्ण देश से संबंध है जैसे: महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान पंजाब, जम्मू कश्मीर आदि। उत्तर प्रदेश में चकिया सिंगरौली बेसीन तथा बेलन घाटी महत्वपूर्ण स्थल है। हालांकि उत्तर पश्चिम क्षेत्र में उतने स्थल

Scanned with CamScanner

प्राप्त नहीं होते जितने प्रायद्वीपीय क्षेत्र में प्राप्त हुए हैं इसका मुख्य कारण पंजाब में उपयुक्त कच्चे माल का अभाव माना जाता है।

मध्य पुरापाषाण काल और फलकों की विशेषता

फलकों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाण काल को फलकों संस्कृति की संज्ञा दी गई है। नेवासा (गोदावरी नदी के तट पर) मध्य पुरापाषाण काल की संस्कृति का प्रारूप स्थल है। एच. डी सांकालिया ने इसे प्रारूप स्थल घोषित किया है।

उपकरण :- इस काल में हमें काटने के औजारों (chopper) की प्रधानता मिलती है।

(iii) उच्च पुरापाषाण काल :- इस काल में नमी कम हो गई। शुष्क अवस्था का विस्तार हिमयुग की उस अंतिम अवस्था के साथ रहा जब जलवायु अपेक्षाकृत गर्म हो गयी। इस काल की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

Scanned with CamScanner

(a) इसमें उपकरण बनाने की मुख्य सामग्री लम्बे स्थूलप्रस्तर फलक होते हैं।

(b) इस काल के उपकरणों में तक्षणी और खुरचनी उपकरणों की प्रधानता बढती गयी

(c) इसकाल में अस्थि (हड्डी) उपकरणों को भूमिका भी महत्वपूर्ण हो गयी।

(d) इसकाल में नक्काशी और चित्रकारी दोनों रूपों में कला का विकास हुआ। बेलन घाटी स्थित लोहदा नाले से प्राप्त अस्थि निर्मित मातृदेवी की मूर्ति इसी काल की है। विंध्य क्षेत्र में स्थित भीमबेटका में विभिन्न कालों की चित्रकारी देखने को मिलती है। प्रथम काल में उत्तर पुरापाषाण काल की चित्रकारी हरे व गहरे लाल रंग का उपयोग हुआ है सभ्यता के इस आदिम युग में मानव अग्नि, कृषि कर्म तथा पशुपालन नहीं था तथा न ही बर्तनों का निर्माण करना जानता था. इस काल का विशेष मानव खाद्य पदार्थों का मात्र उपभोक्ता ही था. उत्पादक नहीं

दो कारणों से इस काल का विशेष महत्व है। प्रथम इस काल में होमोसेपियन का विकास, दूसरे इस युग में उपयोग में लाए जाने वाले उपकरण चकमक के बने थे। मध्य पाषाण काल की यह विशेषता थी। जायन थ्रीपस लघु औजार बनाते थे खाद्य सामग्री के रूप में कई तरह के सामान, कच्चे मांस का प्रयोग होता था। अकेले शिकार करने के बदले सामोहिक शिकार किया जाता था जानवरों के मांस, फलों, मछली को खाद्य पदार्थ के रूप में संग्रहित किया जाता था। पूरी बरासी का जैसी फसलों का लोगों को बोध हो रहा था। अब भाले बरछे के स्थान पर तीर धनुष का प्रयोग होता था। बड़े जानवरों का भी शिकार किया जाता था। जायनथ्रोपस और होमो सेपियन विकसित अवस्था में थे। योग संबंध अनिश्चित न होकर निश्चित व्यक्तियों के साथ होने लगा।